ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन।। २० ।।

ला मकान, शून्य, निर्गुण तथा निरंजन (सभी निराकार के पूजक हैं) को छोड़कर अक्षर के पार जाकर परमधाम का वर्णन करना है। उसका यह मंगलाचरण है।

मंगलाचरण तमाम ।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८६ ।।

और ढाल चली

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे इश्क! तू मेरे पास आ, तो अपने दिल की तड़प पूरी कर लूं। अहं छोड़ूं और अपने निजघर (परमधाम) को देखूं। श्री राजजी के चरणों तले बैठकर आराम करूं और प्रीतम के साथ प्रेम की लीला करूं।

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं।। २ ।।

अब मैं जागृत बुद्धि अद्वैत तारतम वाणी का गान कर अपनी परआतम की फरामोशी को उड़ाऊं और सब सुन्दरसाथ को इकट्ठा जगाऊं। बाद में अक्षर को भी जागृत कर दूं।

जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित।। ३ ।।

जब माया का प्रलय हो जाता है तो अद्वैत भूमिका के बिना और कुछ नहीं रह जाता। यह वही अद्वैत भूमि है जहां श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के साथ नित्य आनन्द करते हैं।

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं।
अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं।। ४ ।।

अब इस बात को मोमिनों को बार-बार समझाऊं और सबों को प्रेम की मस्ती पिलाऊं, ताकि वह उस मस्ती में तृप्त हो जाएं और उनकी परआतम में इश्क बढ़ जाए।

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित।
किन बिध बन मोहोल मन्दिर, देखों धनी जी की लीला अंदर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज! मेरे चित्त में परमधाम देखने की चाहना लगी हुई थी कि परमधाम के वन, महल, मन्दिर तथा धाम के अन्दर मूल-मिलावा की लीला कैसी है, उसे देखूं।

विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के विलास का स्वरूप कैसा है? उसे बिना देखे शान्ति कैसे मिले? परमधाम के जल, जमीन, पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम के सब ठिकाने और अक्षर ब्रह्म की लीला कैसी है? यह देखने की चाह थी।

Nijanand App

सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर।
धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई।।७ ।।

इन सबकी शोभा को अपनी नजर से और वतन को जो हमारा घर है देखने की चाह थी। धनी श्री देवचन्द्रजी ने वर्णन करके चित्त में तो बिठा दिया था, परन्तु फिर भी साक्षात् दर्शन नहीं हुए।

तुम दई जो पिया मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब विध।
और हिरदे जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊं इनों को दृढ़ाई।।८ ।।

हे श्री राजजी महाराज! जो अखण्ड न्यामत आपने दी है, वह सब मैंने अपने सुन्दरसाथ को बताई। मुझे हृदय में और भी जो ज्ञान प्राप्त हुआ, वह भी सुन्दरसाथ को देती हूं।

अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं।
जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए।।९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! जो मुझे सतगुरु धनी श्री देवचन्द्रजी ने बताया था, पहले वह बताती हूं उसके बाद स्वयं देखकर आपको दिखांऊगी। रंग महल के सामने दो जवेरात के सुन्दर चबूतरे हैं। इनकी शोभा का वर्णन इस मुख से नहीं होता।

द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिंन।
दोनों पर नंगों के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल।।१० ।।

रंग महल के आगे तीन चबूतरे हैं दो दोनों तरफ और एक अलग दोनों के ऊपर सुन्दर नगों के फूल बने हैं जिन्हें देखकर चित्त में बड़ी प्रसन्नता होती है (यह धनी देवचन्द्रजी बताते थे)।

बेला कई रंगों कई नकस, देखो एक दूजी पे सरस।
ता बीच चरनी केती कई रंग, बेलां कटाव जड़ित कई नंग।।११ ।।

इन चबूतरों में कई तरह की बेलों की कई रंगों की नक्शकारी है जो एक से दूसरी अच्छी लगती है। उनके बीच में सीढ़िया हैं जिनके अन्दर की बेलों में कई तरह के नग जड़े हैं और चित्रकारी बनी है।

दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जरी।
दाहिने हाथ भिंन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा।।१२ ।।

दोनों तरफ किनारों पर कंगूरे बने हैं और कई तरह से सिधाई में नग जड़े हैं। दाहिने हाथ पर एक अलग चबूतरा है। इन दोनों के बीच की गली में तीसरा लगता हुआ है।

ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर।
चारों तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न बरनी।।१३ ।।

ऊपर पेड़ों की छाया है जो पूरे चबूतरे पर छाया करती है। चारों तरफ तीन-तीन सीढ़ियां लगी हैं जिसके किनारे की शोभा बेशुमार है।

उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजा रेज।
ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत।।१४ ।।

चांदनी चौक की भूमि बड़ी उज्ज्वल है और वहां की रेती बिजली की चमक के समान चमकती है। इस रेत की किरणें आसमान तक जाती हैं और आसमान में जुदा-जुदा रंगों से यह किरणें टकराती हैं।

Nijanand App

सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार।
इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास।। १५ ।।

उनके टकराने से रोशनी वन पर पड़ती है और वन की रोशनी भी कम नहीं होती। यहां के मन्दिरों का तेज भी आसमान में नहीं समाता।

जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर।
जोत रोसन भरयो आसमान, किरना सके न कोई काहूं भान।। १६ ।।

इन सबकी नूरी किरणें सूर्य के समान रोशनी देती हैं। उनसे शीतलता होती है। इन किरणों की रोशनी से आसमान जगमगा उठता है और कोई भी किरण दूसरी किरण को मिटा नहीं सकती, अर्थात् कोई किरण किसी से कम नहीं है।

सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सो/तो होए नहीं बरनन।
इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन क्यों होए।। १७ ।।

इस मुख से इस वन की शोभा का कैसे वर्णन करूं? इनका वर्णन सम्भव नहीं है। यहां की हर चीज सुगन्धित है। इस जबान से उसका बयान कैसे हो?

इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरन्ग देखावे कई रंग।। १८ ।।

यहां पर जल और हवा की लहरों पर लहरें चलती हैं। उनकी शोभा का मैं वर्णन कैसे करूं? जल की उठती तरंगों में कई तरह के रंग दिखाई देते हैं।

चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट।। १९ ।।

चन्द्रमा और सूर्य धनी की आज्ञा पर चलते हैं। उनकी शोभा का मैं कैसे वर्णन करूं? यहां जमुनाजी के किनारे पर सात घाट हैं (केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और बट) और इनके ठीक मध्य में जमुनाजी का पाट घाट है।

तापर द्योहरी एक, जल पर पाट कठेड़ा विसेक।
चारों थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग।। २० ।।

पाट घाट के ऊपर एक द्योहरी बनी है और जल के ऊपर तीन तरफ से कठेड़ा लगा है। ऊपर के बारह थंभ जल में झलकते हैं।

आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले।
याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवें।। २१ ।।

इन बारह थंभों के नीचे जल के अन्दर चार-चार थंभों की चार हारें सोलह थंभे हैं। उन चार-चार थंभों की मेहराबों में से तीन घड़नाले निकलते हैं। इस पाट घाट की किरणें आसमान में नहीं समातीं और फिर फिर नजर घूम जाती है।

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनो बनराए।
बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं।। २२ ।।

पाट घाट के बाएं तरफ तीन घाट हैं और उनके तीनों अलग वन हैं (केल, लिबोई और अनार)। उसके बाएं तरफ बड़ा वन है। यहां श्री राजजी महाराज और सखियां कभी-कभी खेलने जाती हैं।

Nijanand App

लम्बी डारें ऊंचा बन, कई भांत हिंडोले झूलन।
तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं।। २३ ।।

वनों की डालियां लम्बी-लम्बी हैं। कई तरह के झूले (हिंडोले) लगे हैं। तीन घाट और तीन वन जो कहे हैं, दिखाती हूं और तीन वनों के नाम सुनाती हूं।

केल लिबोई और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए।। २४ ।।

तीन वन केल, लिबोई और अनार के हैं। पाट घाट के दाहिनी तरफ भी तीन वन हैं। इनके नाम बट, नारंगी और जांबू हैं। अमृत वन के सामने पाट घाट आया है।

जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए।
जमुना जी के दोऊ किनारे, बन जल पर लगी दोऊ हारें।। २५ ।।

इन घाटों के पेड़ों की डालें यमुनाजी के जल पर आकर लगती हैं और दूसरी ओर जमीन की तरफ शोभा दे रही हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे पर वन की दो हारें हैं (पुखराजी रौंस)।

आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें।
आगे बन के जो मंदिर, ताको बरनन करूं क्यों कर।। २६ ।।

दोनों किनारों पर से जमुनाजी के ऊपर पेड़ों की डालियां आधी जल पर आधी वन पर पड़ती हैं। उसके आगे जो वनों (कुंज-निकुंज) के चौरस और गोल मन्दिर हैं, उनका वर्णन कैसे करें?

बेलां बन चढ़ियां इन सूल, हुई दिवालें पात फूल।
गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग।। २७ ।।

इन कुंज वन के मंदिरों में तरह-तरह की बेलें चढ़ी हैं, पत्ते और फूलों की दिवारें बन गई हैं। हर एक के चारों तरफ खिले हुए फूलों के रंग अलग-अलग हारों में जहां जैसा चाहिए, शोभा देते हैं।

इत लता चढ़ियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन।
जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक।। २८ ।।

यहां पर बेशुमार लताएं, कुंज-निकुंज के मन्दिरों पर चढ़ी हैं और उसके ऊपर तरह-तरह के फूल खिले हैं। ऐसा लगता है जैसे सोने में तरह-तरह के जवेरों के नग जड़ दिए हों।

बीच जमुना जी के और मन्दिर, अतिबन सोभित बन के अंदर।
कई सेज्या बनी फूल बन में, कई रंग हुए सघन में।। २९ ।।

जमुनाजी के और परमधाम (रंग महल) के बीच में वनों में कुंज-निकुंज की बड़ी शोभा है। यहां वनों में फूलों की ही सेज्या बनी है और कई तरह के रंगों के फूल उस सेज्या में झलक रहे हैं।

इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनन्द इन वतन।
मिनें राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए।। ३० ।।

यहां पर ब्रह्मसृष्टियों के चालीस जुत्थ (यूथ, सैयां) कभी-कभी खेलने आती हैं और सदा आनन्द करती हैं। यहां पर श्री राजजी श्री श्यामाजी भी साथ में होते हैं और इस तरह से सब सखियों को अपार सुख मिलते हैं।

Nijanand App

पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी।
निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली।। ३१ ।।

यहां के पेड़ अलग-अलग तथा लम्बी डालियों वाले हैं जिनके नीचे घनी छाया है। यहां पर एक गली से दूसरी, दूसरी से तीसरी आपस में मिलती हैं।

कई आवत बीच आड़ियां, कई सीधियां कई टेढ़ियां।
बन गलियों में बराबर, न कहूं अधिक न छेदर।। ३२ ।।

कई गलियां आड़ी आती हैं। कई गलियां टेढ़ी आती हैं, परन्तु वृक्षों की छाया सभी पर है। छाया कम ज्यादा कहीं नहीं है।

ऊपर ढांपियां सारी सनन्ध, सोभा बनी जो दोरी बंध।
तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती।। ३३ ।।

गलियां ऊपर से ढकी हुई हैं। उनकी शोभा एक सीध में दिखाई पड़ती हैं। उनके नीचे जहां तक नजर जाती है, सुन्दर उज्ज्वल रेत की सफ़ेदी झलकती है।

जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती।
कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बड़े बड़े रे मोटे।। ३४ ।।

जमीन के ऊपर तथा नीचे रेत के कण मोतियों के समान लगते हैं। यह कहीं छोटे, कहीं बड़े-बड़े मोटे और कहीं बारीक हैं।

कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी।
कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी।। ३५ ।।

कई जगह पर हीरों की कणी जैसे लगते हैं। हर स्थान पर हर प्रकार की बेशुमार शोभा है। कहीं पर दोखूनी, कहीं तीनखूनी, कहीं चारखूनी और कहीं गोल रेती के कण दिखाई देते हैं।

ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती।
बन फूल फूले बहु रंग, झलूब रहे बोए सुगन्ध।। ३६ ।।

इस तरह से मैं रेती की शोभा किस तरह कहूं? बेशुमार शोभा है। वन में तरह-तरह के रंग के फूल खिले हैं जो झूम-झूमकर सुगन्धि बिखेर रहे हैं।

एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए।
एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर।। ३७ ।।

इन फूलों की खूबी और खुशबू दोनों का वर्णन किस जबान से करूं? एक तो सुगन्धि देते हैं दूसरा उनका तेज (शोभा) सब ठिकानों पर अपरंपार है।

तलाव जमुना जी के मध, बन के मंदिर या विध।
ए खेलन के सब ठौर, तलाव विध है और।। ३८ ।।

हौज कौसर तालाब और जमुनाजी के बीच में कुंज-निकुंज के मन्दिर इस तरह से शोभायमान हैं। यह सब खेलने के ठिकाने हैं। हौज कौसर तालाब की हकीकत तो अलग ही है।

Nijanand App

तलाव बनें लिया घेर, ऊपर द्योहरियां चौफेर।
कई पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली बारे।। ३९ ।।

हौज कौसर तालाब को बड़े वन ने चारों तरफ से घेर रखा है। ऊपर पाल के चारों तरफ (१२८) द्योहरियां हैं। किनारे पर सीढ़ियां हैं। सुन्दर चौक तथा नीचे चार दरवाजे (जाली वाले) हैं जहां से जमुनाजी हौज कौसर में प्रवेश करती हैं।

बन लेवत सोभा पाले, कई हिंडोले लम्बी डालें।
घाट पाट द्योहरी कई रंग, जल सोभा लेत तरंग।। ४० ।।

पाल के ऊपर बड़े वन की सुन्दर शोभा है जिनकी लम्बी डालियों में हिंडोले लगे हैं। सुन्दर घाटों में तथा द्योहरियों में कई तरह के रंग हैं जिनकी शोभा जल की तरंगों में दिखाई देती है।

गेहेरा अति सुन्दर जल, बीच में बन्यो है मोहोल।
जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे।। ४१ ।।

हौज कौसर तालाब का जल बड़ा सुन्दर है तथा बीच में सुन्दर टापू महल है। जल के बीच जो टापू महल आया उसके गुर्जों के बीच बड़े वन के सुन्दर वृक्ष आये हैं।

जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके।
बन को झुन्ड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक।। ४२ ।।

टापू महल के किनारे पर ताल के जल की लहरें आकर टकराती हैं। इसके मंदिरों में करोंड़ों मणियों का प्रकाश झलक रहा है। ताल की पच्छिम दिशा में झुण्ड का घाट आया है। उसके नीचे अधिक शोभा है।

झुन्ड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए।
धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए।। ४३ ।।

झुण्ड के घाट के नीचे की शोभा वर्णन नहीं हो सकती। श्री राजजी यहां आकर विराजते हैं। श्री राजजी और सब सुन्दरसाथ बैठकर सिनगार करते हैं।

इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे।
मध्य बन धाम के गिरदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए।। ४४ ।।

इस ठिकाने की शोभा बेशुमार है। जिसने देखा है उसी को आनन्द आता है। हौज कौसर तालाब और रंग महल के बीच में बड़े वन के पांच पेड़ चारों तरफ घेर कर आए हैं (बट-पीपल की चौकी के बाद दक्षिण दिशा से होते हुए पच्छिम में अन्न वन से होते हुए उत्तर में बड़े वन और केल के घाट से होते हुए पूरब में सातों घाटों के सामने पाल पर आए हैं)। इनकी शोभा एक दूसरे से चढ़ती हुई है।

बट पीपल निकट बनराए, सो देखे न दृष्ट अघाए।
ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए।। ४५ ।।

यह बड़े वन के वृक्ष बट पीपल की चौकी से लगते हुए आए हैं जिसे देखकर नजर को तृप्ति नहीं होती क्योंकि जैसे-जैसे देखते हैं शोभा और बढ़ती जाती है।

फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे।
चारों तरफों फूले फूल बन, कई रंग सोभा अति घन।। ४६ ।।

यह बड़े वन के वृक्ष रंग महल के चारों तरफ आए हैं और ऊपर-ऊपर इनकी छत्तें मिली हैं। चारों तरफ वनों में फूल खिले हैं जिसके कई रंगों से शोभा अधिक बढ़ जाती है।

Nijanand App

बरन्यो न जाए या मुख, चित्त में लिए होत है सुख।
बन में खेलें टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले।। ४७ ।।

इस शोभा का वर्णन इस मुख से सम्भव नहीं है। इसका चितवन करने से अधिक सुख मिलता है। इन वनों में पशु-पक्षी टोली-टोली में खेलते हैं। मोर और बन्दर किलोल करते हैं।

मिल मिल करें टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार।
बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढ़ी उलटी गुलाटें लेत।। ४८ ।।

मोर आपस में एक साथ आवाज करते हैं और अपने मुख से मधुर वाणी बोलते हैं। बन्दर उछल कूद करते हैं और उलटी टेढ़ी कला बाजियां खाते हैं।

तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर।
सुआ मैना करें चोपदारी, चातुरी इन आगे सब हारी।। ४९ ।।

तीतर, लवा, कोयल और चकोर पक्षियों की आवाज होती है। तोता, मैना चोपदारी करते हैं। इनकी चतुराई देखते ही बनती है।

सखियों के नाम ले ले बुलावें, धनीजी के आगे मुजरा करावें।
पंखी पिउ पिउ तुहीं तुहीं करें, कई बिध धनी को हिरदे धरें।। ५० ।।

सखियां पक्षियों के नाम ले-लेकर धनी जी के सामने बुलाकर इनकी लीला कराती हैं (मुजरा कराती हैं)। पक्षी पिउ-पिउ, तूहीं-तूहीं, धनी-धनी कहकर धनी को दिल में धारण करते हैं।

तिमरा भमरा स्वर साधें, गुंजे गान पियासों चित बांधें।
मृग कस्तूरियां घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर।। ५१ ।।

तिमरा (झींगुर) भंवरा एक स्वर से धनी से चित्त बांधकर मधुर ध्वनि करते हैं। कस्तूरी मृग चारों ओर वन में सुगन्धि बिखेरते हैं।

हाथी बाघ चीते सियाहगोस, खेलें मिलें आतम नहीं रोस।
हंस गरुड़ पंखी कई जात, नाम लेऊं केते कै भांत।। ५२ ।।

हाथी, शेर, चीता, सियार सब मिलकर खेलते हैं। किसी को किसी पर गुस्सा नहीं आता। हंस, गरुड़ तथा कई जाति के पक्षी हैं। इनके नाम कहां तक गिनाऊं?

कई मुरग सुतर कुलंग, खेल करें लड़ाई अभंग।
सीनाकस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें।। ५३ ।।

कई तरह के मुर्गे, शुतुरमुर्ग, कुरंग आपस में लड़ाई का खेल खेलते हैं। सीना कसकर गुलाटियां खाते हैं और कबूतर अपनी चाल की चालाकी दिखाते हैं।

हरन सांम्हर पस्वाड़े पाड़े, खेलें सब कोई अपने अखाड़े।
मुजरे को दोऊ समें आवें, खेल सब कोई अपना देखावें।। ५४ ।।

हिरन, सांभर विशेष तरह के पशु और पाड़े सब अपने अखाड़ों में खेल करते हैं। यह प्रातः सायं दोनों समय श्री राजजी को प्रणाम करने आते हैं और अपनी कलाएं दिखाते हैं।

Nijanand App

पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम।
अति सुन्दर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार।। ५५ ।।

अनेक नाम के पशु-पक्षी हैं जिनके बालों पर अनेक तरह के चित्र बने हैं। जिनकी बड़ी सुन्दर शोभा होती है। उनके खेल तथा बोली मन को लुभाने वाली होती है।

जमुनाजी के जो पार, बन पसु पंखी याही प्रकार।
मोहोल सामे सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कौल।। ५६ ।।

जमुनाजी की दूसरी तरफ वन में पशु-पक्षी इसी तरह के हैं। रंग महल के सामने अक्षरधाम शोभायमान है। यहां के मुख और वाणी से परमधाम की शोभा का वर्णन कैसे हो?

दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर बिराजे।
नूर किरना उठें साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी।। ५७ ।।

रंग महल और अक्षरधाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। दोनों धामों के नूर की बड़ी सुन्दर शोभा है। दोनों धामों की किरणें आमने-सामने उठती हैं जिनकी लहरें चारों तरफ सुन्दर लगती हैं।

लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और।
फिरते अछर के जो बन, लीला एकै देखियत भिंन।। ५८ ।।

दोनों धामों की लीला दो तरह की है पर स्वरूप एक है। अक्षरधाम के चारों तरफ के जो वन हैं उनमें भी लीला एक ही तरह की होती है हालांकि दिखती अलग है।

कई मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलौने।
पसु पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत।। ५९ ।।

कई पशु-पक्षियों के समूह बड़े सुहावने हैं। यह श्री राजजी और ब्रह्मसृष्टियों के खिलौने हैं। पशु-पक्षियों की टोलियां मिलकर धाम के दरवाजे के सामने चांदनी चौक में खेल करते हैं।

दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई।। ६० ।।

परमधाम के मुख्य दरवाजे के किवाड़ों के रंग दर्पण के समान हैं जिनमें सामने के वनों की सुन्दर शोभा दिखाई देती है। किवाड़ की वैनी के ऊपर नग जड़े हैं जिनकी शोभा कहने में नहीं आती।

कई कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर।
फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी।। ६१ ।।

कई तरह के कटाव, नक्काशी, जवाहरात तथा नग (रत्न) चारों तरफ जड़े सुन्दर शोभा देते हैं। दरवाजे के चारों तरफ लाल रंग की मणि का जड़ाव है जिसकी ज्योति अत्यन्त शोभा देती है।

याके तीन तरफ जो दिवाल, कई जवेर भोम रंग लाल।
गोख खिड़की जाली जवेर, कई जड़ाव दिवाल चौक चौफेर।। ६२ ।।

दरवाजे के तीन तरफ (दाएं, बाएं तथा ऊपर) लाल रंग की दीवार है जिसमें कई तरह के जवेर जड़े हैं। छोटी जाली वाली खिड़कियों और रोशनदानों में जवेरात की जाली है। उनमें कई तरह के चारों तरफ से जड़ाव भरे हैं।

Nijanand App

गिरद झरोखे के थंभ फिरते, जुदी कई जिनसों जोत धरते।
नव भोम रंग बरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन।। ६३ ।।

चारों तरफ घेरकर झरोखे तथा झरोखे के थंभ आए हैं जो कई-कई तरह के नगों से जड़े हैं। उनकी रोशनी फैल रही है। नव भोम के रंगों का ऐसा ही वर्णन है। उसके ऊपर दसवीं चांदनी की सुन्दर शोभा है।

मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उद्दोत।
दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई।। ६४ ।।

मन्दिरों के ऊपर कांगरी की शोभा है। ऐसा लगता है जैसे बिजली चमक रही हो। दरवाजे के अन्दर प्रवेश करने पर सामने रसोई की हवेली है जहां नित्य ही सभी मिलते हैं।

स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित।
बन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें तब।। ६५ ।।

इस हवेली के श्याम मन्दिर में रसोई बनती है (उत्तर की दिशा में कोने का मन्दिर छोड़कर रसोई का श्याम मन्दिर है)। उसी के साथ लगता सफेद मन्दिर है (जिसमें सीढ़ियां हैं)। वनों से घूमकर सायंकाल जब लौटते हैं तो इस हवेली में भोजन आरोगते हैं।

चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ लाड़बाई धरे जोत।
साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत।। ६६ ।।

सीढ़ियों के आगे ही सब मिलते हैं जहां लाड़बाई के जुत्थ (समूह) की सखियां रसोई बनाती हैं। बन्दर सब साग-भाजी लाते हैं और सब सखियां संवारती हैं।

कई चौक चबूतरे अंदर, कई विध गलियां मंदिर।
कई जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे।। ६७ ।।

इस तरह से अन्दर कई चौक, चबूतरे, मन्दिर हैं जिनकी दीवारों पर सुन्दर जड़ाव हैं। यहां की जबान से वहां का वर्णन कैसे करें?

कई नकस पुतली चित्रामन, कई बेल पसु पंखी बन।
कंचन कड़े जंजीरां जड़ियां, कई झलके थंभ सीढ़ियां।। ६८ ।।

दीवारों पर कई तरह की नक्काशी, पुतलियां, चित्र, बेल-बूटे, पशु-पक्षियों के आकार बने हैं। सोने के कड़ों में जंजीरें जड़ी हैं तथा थंभ और सीढ़ियों की जगमगाहट होती है।

माहें वस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई।
ताके खिल्ली किनारे भमरियां, ऊपर वस्तां अनेक बिध धरियां।। ६९ ।।

मन्दिरों के अन्दर सन्दूक और सिनगार की बेशुमार वस्तुएं दिखाई देती हैं। वहां खूंटियों के किनारे पर सुन्दर बनावट दिखाई देती है जिनके ऊपर अनेक तरह के सिनगार का सामान रखा है।

ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तुम लीजो कर चितवन।
नव भोम सबों के मंदिर, देखो वस्तां अपनी चित्त धर।। ७० ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं कैसे वर्णन करूं? तुम चितवन करके देख लेना। नौ भोमों में सब सखियों के मन्दिर एक समान हैं जिनमें अपनी चितचाही वस्तुओं को देखो।

Nijanand App

सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार।
सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहू में किन।।७१ ।।

सेज्या तथा सिनगार के सभी सामान हैं। जिसके हृदय में जैसी चाह हो, ले लेना। हर एक मन्दिर सब सामान से भरपूर हैं। किसी भी मन्दिर में किसी प्रकार की कमी नहीं है।

हांस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पिया जी को सब्दातीत।
डब्बे तबके सीसे सीकियां, कई देत देखाई लटकतियां।।७२ ।।

परमधाम में धनी के हांस (हंसी, विनोद) के, विलास के, प्यार के, प्रीति के हर प्रकार के सुख मिलते हैं जो शब्दातीत हैं। उन मन्दिरों में डिब्बे, प्लेटें, शीशियां, सलाईयां कई तरह की लटक रही हैं।

चौकियां माचियां सिंघासन, कई हिंडोले जंजीर कंचन।
कई बासन धात अनेक, कई बाजंत्र विविध विसेक।।७३ ।।

चौकियां, पलंग, सिंहासन (दीवान), हिंडोले सोने की जंजीरों में लटक रहे हैं। कई प्रकार की धातुओं के बर्तन तथा हर तरह के बाजे शोभायमान हैं। (टी. वी., रेडियो, टू इन वन, हारमोनियम, गिटार, सितार, बेंजो, इत्यादि)।

कई झीले चाकले दुलीचे बिछोनें, कई विध तलाई सिरानें।
कई रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कई सिरख सोड़ मन पूरे।।७४ ।।

कई चाकले, दुलीचे, बिछौने, गद्दे, तकिए, ओढ़ने वाली चादरें, गाल के नीचे रखने वाला तकिया तथा रुई से भरी रजाइयां शोभा देती हैं।

सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नव खण्ड सबन।
दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ।।७५ ।।

एक शयन का तथा एक सिनगार का, हर भोम में हर सखी के लिए दो-दो मन्दिर सभी नौ भोमों में हैं। दूसरी भोम में बाएं हाथ के किनारे पर कभी-कभी भुलवनी का खेल करके। खड़ोकली में स्नान कर, चबूतरे पर सिनगार करते हैं।

इत खड़ोकली जल हिलोले, धनी साथ झीलें-झकोलें।
इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें।।७६ ।।

यहां पर दूसरी भोम में खड़ोकली का जल हिलोरें लेता है। यहां सब सुन्दरसाथ धनी के साथ मिलकर जल उछाल-उछाल कर स्नान करते हैं। यहीं पर सिनगार करके खेल करते हैं और जगह-जगह पर टोली-टोली मिलकर आनन्द लेते हैं।

साम सामें मन्दिरों के द्वार, नव भोम फिरती किनार।
ता बीच थंभों की दोए हार, कई रंग नंग तेज अपार।।७७ ।।

सभी नौ भोमों में मन्दिरों के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनके किनारे की शोभा बड़ी सुन्दर है। दोनों मन्दिरों की हारों के बीच में दो थंभों की हारें हैं जहां कई रंगों के नगों की बेशुमार रोशनी होती है।

जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई।
या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मन्दिर।।७८ ।।

मैंने जितनी सामग्री का वर्णन किया है वह सब देखकर आतम तृप्त नहीं होती। मन्दिर को बाहर से देखो या अन्दर से, सब एक समान की शोभा है।

Nijanand App

केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एह बिरत।
तुम लीजो दृढ़ कर चित्त, अपना जीवन है नित।।७९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं तुमको प्यार करके कहती हूं। अपने परमधाम के सारे दिन की यही लीला है। इसे अपने चित्त में धारण कर लेना, क्योंकि यही अपनी अखण्ड घर की लीला है।

श्री धाम की आठ पोहोर की बीतक

धाम के चबूतरे के ऊपर दरवाजे के सामने चार मन्दिर लम्बा दो मन्दिर चौड़ा चबूतरा, दरवाजे के सामने बीच दो मन्दिर का चौड़ा चौक, तीसरी भोम समेत हो जाते हैं। तो यहां दस मन्दिर की लम्बी चार मन्दिर चौड़ी देहेलान है। नीचे के दस थंभों पर कठेड़ा लगा है। दरवाजे के आजूबाजू के दो मन्दिर नहीं हैं। तीन-तीन मन्दिर दोनों तरफ हैं। किनारे वाला नीला, दूसरा पीला और फिर हरा है। दाहिनी तरफ हरे मन्दिर में सेज्या है। पहली गली परिकरमा की आई है। अट्ठाइस थंभ के चौक के सामने तीन सीढ़ी ऊंची हो जाती है। यहीं चार मन्दिर की लम्बी दो मन्दिर चौड़ी देहेलान है।

तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विसाल।
धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात।।८० ।।

तीसरी भोम की जो पड़साल है, वह धाम के दरवाजे के ठीक ऊपर है। यहां पर श्री राजजी महाराज पांचवीं भोम से प्रातः तीसरी भोम पर बड़े दरवाजे के ऊपर थंभों में बनी मेहराव में आकर खड़े होते हैं और अपनी नजर से सामने वाले वनों को देखते हैं।

पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार।।८१ ।।

नीचे चांदनी चौक में पशु-पक्षी मुजरा (दर्शन), प्रणाम करने आते हैं। उन सबका प्रणाम स्वीकार करके अपनी नजरों से सबको सुख पहुंचाते हैं। इसके बाद देहेलान में बैठकर सिनगार करते हैं। सखियां श्री राजजी को प्रसन्न करती हैं।

श्री स्यामाजी मन्दिर और, रंग आसमानी है वा ठौर।
चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी श्री धनी जी के पासे आवें।।८२ ।।

श्री श्यामाजी के सिनगार का मन्दिर दूसरी हार का पहला है। इसका रंग आसमानी है। चार सखियां श्री राजजी को और चार सखियां श्री श्यामा महारानीजी को सिनगार कराती हैं। सिनगार से सजकर श्री श्यामाजी श्री राजजी के पास आती हैं।

सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित्त में लिए होत है सुख।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी।।८३ ।।

यहां की शोभा का इस मुख से कैसे वर्णन करूं? इसको चित्त में लेने से ही सुख मिलता है। सखियां भी अपना सिनगार करती हैं। सखियां मांग सावधानी से संवारती हैं। बड़े प्यार से चोटी गूंथती हैं।

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूखन पेहेरावें।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावे।।८४ ।।

सखियां एक-दूसरे को सिनगार कराती हैं और आभूषण पहनाती हैं। सखियां ऐसा सिनगार करके आती हैं जैसा श्री राजजी के मन भाए।

Nijanand App

सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल।
सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी।। ८५ ।।

सखियां ऐसी लटकती चाल से आती हैं जिससे धनी बहुत प्रसन्न होते हैं। आने के बाद वह एक दूसरी से बड़े आदर से बोलती हैं।

सैयां आवत करें झनकार, पाए भूखन भोम ठमकार।
झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां।। ८६ ।।

सखियों के आने पर उनके पैरों के आभूषण बजते हैं। आभूषणों की ठमकार होती है। मस्ती से भरी हुई सखियों के सिनगार जगमगाते हैं। आनन्द में डूबी बड़े हाव-भाव से आती हैं।

कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां।
सुन्दरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां।। ८७ ।।

एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर परस्पर एक-दूसरे को मोहित करती हैं। एक-दूसरे को हंसाती हुई शोभा देती हैं।

कई फलंग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां।
कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां मचकतियां।। ८८ ।।

कई उछलती छलांगें लगाती आती हैं। कई बेलि (लताओं) की तरह कमर को हिलाती आती हैं। कई लटकती, मटकती चाल से धीरे-धीरे आती हैं। कई मस्ती से मटकती आती हैं।

कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां।
कई आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां।। ८९ ।।

एक दूसरी को ठेलती आती हैं। उनकी टोली की टोली लहरों के समान आती हैं। कई भंवर बनाती चलाती फिरती आती हैं। कई एक-दूसरे पर गिर पड़ती हैं।

कई सीधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे।। ९० ।।

कई सीधी सरकती हुई आती हैं। कई अनेक तरीकों से चलकर आती हैं। एक-दूसरे के आगे आकर सखियां चरणों में प्रणाम करती हैं।

इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं।। ९१ ।।

यहां सखियों का बड़ा मिलावा होता है। इस समय कोई अलग नहीं रहती। कोई छज्जों से, कोई जालियों से, कोई मोहोलों से, कोई ऊपर की भोम से आती हैं।

इत चार घड़ी लों बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें।
दाहिनी तरफ दूजा जो मन्दिर, आए बैठे ताके अंदर।। ९२ ।।

यहां चार घड़ी तक श्री राजजी महाराज बैठते हैं। मेवा, मिठाई आरोगते हैं। दाहिनी तरफ का जो दूसरा मन्दिर है उसके अन्दर जाकर विराजमान होते हैं।

Nijanand App

नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मन्दिरों दिवालों के तांई।। ९३ ।।

यह मन्दिर नीले-पीले रंग के मन्दिर के बीच है। यह हरे रंग का है। उसमें नीले-पीले रंग के मन्दिर की तरंगें आती हैं। इन दोनों रंगों की दीवारों के ऊपर परछाईं पड़ती है।

पैठते दाहिने हाथ जो जांही, सेज्या है या मंदिर मांहीं।
कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन।। ९४ ।।

दूसरे मन्दिर में प्रवेश करते ही दाहिनी हाथ की तरफ सुख सेज्या है। यहां छज्जे के साथ लगा सिंहासन कई जड़ाव से जड़ा है। उसमें श्री राजजी श्री श्यामाजी विराजते हैं।

झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें।
संग सखियां केतिक विराजें, या समें श्री मंडल बाजे।। ९५ ।।

वह दरवाजे के सामने मुख करके झरोखे को (कठेड़े को) पीठ देकर बैठते हैं। उनके साथ कितनी सखियां बैठती हैं। जहां पर श्री मंडल बाजा बजता है।

नवरंगबाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें।
इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावें गुन लाल।। ९६ ।।

यहां नवरंगबाई अपने साज के साथ रसीली मधुर वाणी में गाती हैं। यहां बेनबाई बांसुरी की रसीली आवाज में श्री राजजी के गुणों का गान करती हैं।

सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें।
इन समें भगवान जी इत, दरसन को आवें नित।। ९७ ।।

देहलान से कोई सखी अन्दर आती है, कोई बाहर जाती है, कोई उठती है, कोई बैठती है। इसी समय रोज अक्षर भगवान दर्शन करने आते हैं।

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें।
इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए।। ९८ ।।

झरोखे के सामने नजर करते हैं वहीं श्री राजजी महाराज अपनी नजर घुमाकर दर्शन देते हैं। अक्षरब्रह्म प्रणाम करके पीछे लौट जाते हैं। यह अक्षरब्रह्म कोई और दूसरे नहीं हैं। स्वरूप एक है लीला मात्र से दो हैं।

भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें।। ९९ ।।

अक्षर भगवान अपनी इच्छा से प्रकृति के द्वारा करोड़ों ब्रह्मांड एक पल में बनाते और मिटाते हैं, इसलिए इनकी इस लीला को बाल-चरित्र कहा है।

और एतो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं।। १०० ।।

परमधाम में तो किशोर लीला है जहां सखियां अपार सुख लेती हैं। इस लीला के सुख का कहां तक वर्णन करूं? इसके सुख का शुमार नहीं है।

Nijanand App

सखियां केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरे।। १०१ ।।

इस समय कितनी सखियां अन्न वन में शाक, पान, मेवा लेने जाती हैं। वहां चार घड़ी तक वनों में खेल करती हैं। प्रातः नौ बजे वापस आती हैं।

ए सब इच्छा सों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे।
सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें।। १०२ ।।

यहां सब सामग्री इच्छा से आती है, परन्तु सखियों को सेवा की भावना होती है। सखियां प्यार से सेवा करने में देरी करती हैं और एक-दूसरी से सेवा छीनती हैं।

निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर।
मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी वालने लागे।। १०३ ।।

देहलान में दाहिनी तरफ जो जगह है, वहां पहर दिन चढ़ते सखियां वनों से आ जाती हैं। दोनों हारों के बीच की देहलान में मिलकर पान लगाती हैं।

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन।। १०४ ।।

सभी सखियां मसाला बना-बना कर लेती देती हैं और साढ़े दस बजे तक पान लगाने वाली सखियां सब पान तैयार कर देती हैं।

बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर।
श्री राज बैठे बातां करें, श्री स्यामाजी चित्त धरें।। १०५ ।।

पान बीड़ियों के छबले भर-भरकर श्री राजजी महाराज के पलंग के नीचे चौकी पर रखती हैं। जहां पर श्री राजजी बैठकर बातें करते हैं और श्यामाजी ध्यान से सुनती हैं।

सैयां परसपर करें हांस, लेवें धनी जी को विविध विलास।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही।। १०६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां आपस में हंसती हैं और श्री राजजी से तरह-तरह का आनन्द लेती हैं। एक दो घड़ी के बाद लाड़बाईजी आकर विनती करती हैं।

श्री धनीजी की अग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं।
श्री धनीजी ने अग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी।। १०७ ।।

लाड़बाईजी ने विनती की, हे धनीजी! आज्ञा हो, तो मैं रसोई ले आऊं। श्री धनीजी ने आज्ञा कर दी, तो सखियों ने दो चौकियां देहलान में लाकर रखीं।

सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई।
श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर।। १०८ ।।

सखियों ने दो चाकले लाकर बिछा दिए। श्री राजजी महाराज ने वस्त्र उतारकर कमर पर पिछौड़ी पहनी।

Nijanand App

श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सोहाए।
श्री राज पखाले हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ।। १०९ ।।

श्री राजजी महाराज चाकले पर आए और श्री श्यामाजी भी साथ में विराजमान हुए। श्री राजजी ने हाथ धोए। श्री श्यामाजी ने भी हाथ धोए।

सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें।
मेवा अंन ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आई।। ११० ।।

सखियां दौड़-दौड़कर जाती हैं और आरोगने की सामग्री लाती हैं। मेवा, अन्न, शाक, मिठाई और कई तरह की सामग्री लेकर आती हैं।

एक ले चली साक कटोरी, तापे छीन ले चली दूसरी।
तिनथे झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी।। १११ ।।

एक सखी साग की कटोरी लेकर चलती है। उससे दूसरी सखी छीन लेती है। तीसरी सखी उससे झटक लेती है और चौथी उससे भी लेकर दौड़ती है।

जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहू किनपे।
इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां।। ११२ ।।

जो कोई एक दूसरी से छीन लेती है तो वह रोष नहीं करती। यहां से जो लौटकर जाती है, वह जाकर और कटोरी लाती है।

यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें।
सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार।। ११३ ।।

इस तरह से सभी सखियां एक-दूसरे से लेकर बड़े प्यार से दूसरी को देती हैं। उनके चलने से मन्दिरों में आभूषण की झनकार होती है और मधुर स्वर निकलते हैं।

सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी।
कई स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन।। ११४ ।।

सब सखियां आमने-सामने दौड़ती हैं और सभी जगह दौड़ने की आवाज उठती है। उनके आभूषण कई तरह से स्वर करते हैं तथा पैर के पटकने से आभूषणों की ध्वनि निकलती है।

कई बिध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी।
इन समें की जो आवाज, सोभा धाममें रही विराज।। ११५ ।।

इस तरह से कई तरह की मीठी-मीठी आवाज सुनाई पड़ती है। जिसका इस मुख से वर्णन सम्भव नहीं है। इस समय की आवाज पूरे परमधाम में गूंजती है।

दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सोतो लिए मन के भाई।
सब खेलें हांसी करें, आए आए धनी जी के आगे धरें।। ११६ ।।

लाड़बाई दूध, दही लेकर आती हैं। वह इच्छा के अनुसार श्री राजजी और श्यामाजी ले लेते हैं। सभी सखियां आपस में हंसती-खेलती हैं और तरह-तरह की सामग्री धनीजी के आगे लाकर रखती हैं।

Nijanand App

या समें दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे भोम सब गाजे।
झारी लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रुमाल पोंछाई।। ११७ ।।

इस समय सखियों के दौड़ने से आभूषण बजते हैं। उनके पैरों की आवाज सब जगह गूंजती है। पानी का लोटा लेकर श्री राजजी के हाथ धुलाए, कुल्ला कराया तथा हाथ और मुख रूमाल से पोंछाया।

श्री स्यामाजी चल्लू करी, दोए बीड़ी दो मुख में धरी।
श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग स्यामाजी उठे ततखिन।। ११८ ।।

श्री श्यामाजी ने भी हाथ धोए, कुल्ला किया, रूमाल से पोंछा फिर श्री राजजी श्री श्यामाजी ने पान बीड़ा मुख में लिया। श्री राजजी उठकर सिंहासन पर विराजमान हुए। साथ में श्री श्यामाजी भी उठे और सिंहासन पर विराजमान हुए।

दोऊ आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए।
सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां।। ११९ ।।

युगल स्वरूप सिंहासन पर विराजमान हुए और सखियों ने चौकी और चाकले उठाए। फिर सब सखियां नीचे पहली भोम में रसोई की हवेली में भोजन करने गईं और वापस आकर श्री राजजी महाराज से पान बीड़ा लिया।

सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर।
सैयां बैठी जुदे जुदे टोले, करें रेहेस बातें दिल खोलें।। १२० ।।

इतने में दोपहर का समय हो गया। बारह बज गए। श्री राजजी, श्री श्यामाजी नीले-पीले रंग के मन्दिर में सुख सेज्या पर आकर विराजमान हुए। सब सखियां जोड़े-जोड़े में अलग-अलग बैठीं और अपने दिल की बातें खुलकर एक-दूसरे से कहने लगीं।

तित कई बिध रस उपजावें, कई विलास मंगल मिल गावें।
कई हंस हंस ताली देवें, यों कई बिध आनन्द लेवें।। १२१ ।।

वह कई तरह से आनन्द लेती हैं और श्री राजजी महाराज के विलास के सुख के मंगल गीत गाती हैं। उनमें से कई सखियां हंस-हंसकर ताली देती हैं और कई तरह का आनन्द लेती हैं।

कई बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए।
मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें।। १२२ ।।

कई नवीं भोम में छज्जों पर जाकर अंग से अंग मिलाकर बैठ जाती हैं और अपनी मधुर वाणी से एक दूसरे से प्रेम बढ़ाती हैं।

रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाए या मुख।
सरूप सोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता।। १२३ ।।

वह अनेक तरह की बातों का सुख लेती हैं। उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। सखियों के स्वरूप, शोभा, सुन्दरता, वस्त्र तथा आभूषणों की शोभा का प्रकाश चारों ओर फैलता है।

कई बैठत मिलावे आए, बैठें अंगसों अंग लगाए।
सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें।। १२४ ।।

कई मिलकर आती हैं और अंग से अंग लगाकर बैठ जाती हैं और एक-दूसरे से बड़े प्रेम में मग्न होकर बातें करती हैं।

Nijanand App

हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजीको देवें।। १२५ ।।

हंसी और विनोद की ऐसी बातें करती हैं कि अधिक प्रेम और सुख का अनुभव होता है। इस तरह से सखियां आपस में एक-दूसरी को सुख लेती-देती हैं।

कई बैठत जाए हिंडोले, अनेक करत कलोलें।
कई बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिने रंगें।। १२६ ।।

कई सखियां सातवीं और आठवीं भोम के हिंडोलों में जाकर आनन्द करती हैं। कई सखियां अन्दर शयन के मन्दिर में पलंगों पर बैठकर तरह-तरह के आनन्द की बातें करती हैं।

यों अनेक विधें सुख नित, पियाजी को सदा उपजत।
सब सैयां पोहोर पीछल, टोलें तीसरी भोम आवें चल।। १२७ ।।

इस तरह से रोज ही पियाजी के अनेक तरह के सुख सदा लेती हैं। एक पोहोर (पहर) बाद तीन बजे सायं सखियों की टोलियां तीसरी भोम में चलकर आ जाती हैं।

मंदिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब।
तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल।। १२८ ।।

जब सब सखियां नीले-पीले मन्दिर के सामने आकर खड़ी हो जाती हैं तब दरवाजा खुलता है और श्री राजश्यामाजी के दर्शन होते हैं। इसके बाद छठी भोम से सुन्दर सुखपाल आकर तीसरी भोम के छज्जे के साथ लग जाते हैं और श्री श्यामाजी श्री राजजी के साथ एक सुखपाल में बैठती हैं।

दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कई रंग।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन।। १२९ ।।

दो-दो सखियां मिलकर एक-एक सुखपाल में बैठती हैं और कई तरह के आनन्द लेती हैं। जहां जाने की इच्छा होती है वहां ले जाते हैं।

या जमुनाजी या तलावे, आए खेलें जो मन भावें।
श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे।। १३० ।।

कभी जमुनाजी, कभी हौज कौसर तालाब में आकर इच्छा के अनुरूप खेल खेलते हैं। श्री राजश्यामाजी के सुखपाल के पास ही सब सुखपाल उतार देते हैं।

जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब।। १३१ ।।

सभी जुदा-जुदा सखियों के समूह वनों में खेलते हैं और नए-नए आनन्द करते हैं। यह दो घड़ी दिन रहने तक खेलते रहते हैं।

सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें।
श्री राज स्यामाजी उठकर, उतारे हैं वस्तर।। १३२ ।।

सब सखियां श्री राजश्यामाजी के पास आकर झीलने की बात करती हैं। श्री राजश्यामाजी उठकर अपने वस्त्र उतारते हैं।

Nijanand App

पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामाजी सैयां सबन।
इत एक घड़ीलो झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें।। १३३ ।।

श्री राजश्यामाजी व सखियां सब झीलने (स्नान करने) के वस्त्र पहनते हैं और एक घड़ी तक जल में कई तरह के खेल करते नहाते हैं।

बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक।
हुओ संझाको अवसर, राज स्यामाजी बैठे सिनगार कर।। १३४ ।।

जब एक घड़ी दिन बाकी रह जाता है तब सब सिनगार करते हैं। संझा (संध्या) के समय श्री राजश्यामाजी सिनगार करके बैठते हैं।

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजीके पांउ लागे।। १३५ ।।

सब सखियां आपस में सिनगार कराती हैं तथा एक-दूसरे से आगे होकर आती हैं। मन में बड़ी उमंग भरकर श्री राजश्यामाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं।

पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास।। १३६ ।।

प्रणाम करके पीछे लौटती हैं। जैसा मन चाहता है वैसा खेलती हैं। वन के अन्दर कई तरह के फूल खिलकर सुगन्धि बिखेरते हैं जहां सखियां विलास का आनन्द लेती हैं।

ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग।। १३७ ।।

चन्द्रमा, वन, सभी वनस्पति तथा कण-कण में रोशनी सब जगह फैली है। जहां मन में उमंग लेकर सखियां कभी-कभी पियाजी के संग भी खेलती हैं।

इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगें।
इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल।। १३८ ।।

यहां वन में कई तरह के मेवा आरोग कर वन में आनन्द लिया, फिर सुखपालों में आकर बैठ गए।

इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत।
घरों आए सुखपाल सारे, राज स्यामाजी पांचमी भोम पधारे।। १३९ ।।

इतने में एक पहर रात हो गई और सुखपालों को घर की तरफ चलाया। सभी सुखपाल पांचवीं भोम के छज्जे के साथ आकर लगाए गए। श्री राजश्यामाजी पांचवीं भोम शयन के वास्ते पधारे।

पंद्रा दिन खेलें बन, पंद्रा दिन सुख भवन।
अब कहूं भवन को सुख, जो श्री धनीजी कह्यो आप मुख।। १४० ।।

पन्द्रह दिन वन में खेलते हैं और पन्द्रह दिन रंग महल के अन्दर सुख लेते हैं। रंग महल के सुखों का वर्णन करती हूं जो श्री राजजी महाराज ने अपने श्रीमुख से कहे थे।

बनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मन्दिर।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी।। १४१ ।।

वन में सिनगार करने के बाद लौटे तो सायंकाल पहली हवेली में (रसोई की हवेली में) आरोग कर चौथी भोम में चढ़े। वहां नवरंगबाईजी अपने जुत्थ (समूह) के साथ नृत्य करने को तैयार हैं।

Nijanand App

निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें।। १४२ ।।

चौथी भोम की चौरस चौथी हवेली में नवरंगबाईजी नृत्य करती हैं और साथ में कई बाजे बजते हैं। नवरंगबाईजी नृत्य करती हैं और गाती हैं बाकी सखियां स्वर पूरती हैं।

कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन।
पांऊं ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे।। १४३ ।।

हाथ के और चरणों के आभूषण पड़ताल (पैरों से ताल देना) पड़ने पर बजते हैं। नवरंगबाई ऐसी कला से पांव चलाती हैं कि उनमें घूंघरियों की आवाज अच्छी निकलती है।

जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पांउं चलावें।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन।। १४४ ।।

जब पैर के दो आभूषण की आवाज बुलाती हैं तो दो बोलते हैं। यदि तीन की इच्छा होती है तो तीन बजते हैं और चार की इच्छा होती है तो चार बजते हैं। इस तरह की अदभुत कला से नवरंगबाई पैर चलाती हैं।

जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे।। १४५ ।।

जब एक झांझरी का स्वर निकालती हैं तो लगता है यही सबसे अच्छा है। बीच-बीच में आभूषणों को जैसा बुलाना चाहते हैं वह वैसा ही बजता है।

जब बोलावें सर्वा अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छब जुदी सबोंकी सोहावे।। १४६ ।।

जब वह अंगों के सब आभूषणों को बुलाना चाहती हैं तो सब आभूषण एक संग बोलते हैं। जब अलग-अलग उनके स्वरों को बुलाती हैं तो सबकी अलग आवाज ही अच्छी लगती है और शोभा देती है।

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान।
क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत।। १४७ ।।

हर एक आभूषण अलग-अलग गान करते हैं और उनके साथ ही मुख से बजने वाले बाजों की एक ही तान निकलती है। इस प्रकार का नृत्य का बखान किस मुख से कहूं? उसका आनन्द मोमिन जो चितवन करते हैं, वही जानते हैं।

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें।
सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजी के आगे बिराजे।। १४८ ।।

अनेक स्वरों में बाजे बजते हैं जिनकी ध्वनि पांव की पड़ताल से गरजती हैं। सखियां सिनगार (सज) कर धनीजी के सामने बैठी होती हैं।

निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान।
इन लीला में आयो चित्त, छोड़्यो जाए न काहूं कित।। १४९ ।।

नृत्य के समय आभूषण की आवाज से स्वर निकलते हैं जो सब सैयों (सखियों) को एक समान सुनाई देते हैं। जब इस लीला में चित्त लग जाता है तो इसे छोड़ने को दिल नहीं करता।

Nijanand App

छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटें।
इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती।। १५० ।।

जब चित्त इस लीला से छुड़ाने पर नहीं छूटता तो आत्मा की नजर कैसे हट सकती है? यहां बहुत तरह की लीलाएं होती हैं। यह सुख वही सखियां जानती हैं जिनने आनन्द लिया होता है।

थंभों दिवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत।
पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कई रंग नंग विसाल।। १५१ ।।

थंभों में, दीवारों में तथा नगों के प्रकाश में लगता है जैसे सब जगह नृत्य हो रहा है। नृत्य की हवेली के पीछे की तरफ मन्दिर और दीवारें सफेद रंग की हैं जिनमें कई रंग के नग दिखाई देते हैं।

दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दिवाल दिल साखी।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल।। १५२ ।।

दाहिने तरफ लाखी (गहरा लाल) रंग का मन्दिर है जिसमें कई तरह के कटाव दीवारों में बने हैं। बाई तरफ पीली दीवार है जिसमें काले, सफेद और लाल रंग झलकते हैं।

सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस।। १५३ ।।

सामने तीसरी हवेली की पिछली दीवार नीले रंग की दिखाई देती है। इस तरह से चारों दिशाओं से किरणें आपस में लड़ती हैं। हवेली में श्री राजजी महाराज की नजरों से नूर की बरसात होती है। इस जबान से धनी के आनन्द का क्या वर्णन करूं?

पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख अग्या करके बोलावें।
इतहीं थें अग्या करी, पांउं लाग सेज्या दिल धरी।। १५४ ।।

यह नृत्य की लीला एक पहर (प्रहर) तक चलती है। उसके बाद श्री राजजी महाराज आज्ञा करके बुलाते हैं। श्री राजजी की आज्ञा से सब सखियों ने पांव लगकर सेज्या (शयन) की इच्छा की।

दई अग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्री राज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे।। १५५ ।।

श्री राजजी महाराज ने सखियों को आज्ञा दी। सभी श्री राजजी श्री श्यामाजी के चरणों में प्रणाम कर शयन के वास्ते अपने-अपने मन्दिरों में गईं। रंग परवाली मन्दिर में श्री राजजी और श्री श्यामाजी सेज्या पर पधारे और कुछेक वस्त्र आभूषण उतारे।

ए मंदिर रंग-परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत।। १५६ ।।

इस रंग परवाली मन्दिर की लालिमा का मैं कैसे वर्णन करूं? इसमें अनेक रंगों की किरणें उठती हैं जिनकी चमक का वर्णन मुझसे नहीं कहा जाता।

पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सबों मन्दिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे।। १५७ ।।

पीछे बीस एक सखियां श्री राजजी श्री श्यामाजी के पास रह जाती हैं। यह भी सेवा करके अपने-अपने मन्दिरों में वापस आती हैं। श्री राजजी सब मन्दिरों में पधारते हैं। श्री राजजी महाराज सब सखियों के अन्दर विराजमान होते हैं वही बाहरी स्वरूप धारण कर सेज्या का सुख देते हैं।

Nijanand App

अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चितको।
सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात।। १५८ ।।

यहां रंग परवाली मन्दिर और शयन के मन्दिरों के प्रेम का कैसे बयान करूं? यहां पर सखियां अपना मनचाहा सुख लेती हैं। सारी रात सुख लेने के बाद सवेरे तीसरी भोम में आ जाती हैं।

अब कहूं या समें की बात, सो तो अति बड़ी विख्यात।
कोई होसी सनमन्धी इन घर, सो लेसी वचन चित धर।। १५९ ।।

अब इस समय की बात कहती हूं जिसकी हकीकत बहुत बड़ी है। जो परमधाम का सुन्दरसाथ होगा वह इन वचनों को चित्त में धारण करेगा।

ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार।
सनमन्धियों की एही पेहेचान, वाके सालसी सकल संधान।। १६० ।।

यह वाणी बड़ी सख्त और दिल को चुभने वाली और सार से भरी है। इसे लेकर ब्रह्मसृष्टि अक्षरधाम से पार परमधाम पहुंच जाएगी। ब्रह्मसृष्टियों की यही पहचान है कि यह वचन उनके अंग-अंग में चुभ जाएंगे।

जाको लगी सोई जाने, मुख बरनी न जाए बखाने।
खेल मांग के आइयां जित, धनी आए के बैठे तित।। १६१ ।।

यह बात जिसको चुभेगी वह समझेगा। इस मुख से उस सुख का वर्णन सम्भव नहीं है। सखियां परमधाम से खेल मांगकर यहां आई हैं, वहीं श्री राजजी महाराज उनके दिलों में विराजमान हो गए हैं।

पासे बैठके खेल देखावें, हांसी करने को आप भुलावें।
भूलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन।। १६२ ।।

श्री राजजी महाराज यहीं मोमिनों के दिल में बैठकर ही खेल दिखा रहे हैं और हमारे ऊपर हंसी करने के लिए हमें भुला रहे हैं। श्री राजजी महाराज ने हमारे मन को ऐसा भुला दिया है कि खेल देखकर हम अपने घर और धनी को भूल गए।

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन।
जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम।। १६३ ।।

श्री महामतिजी सब सुन्दरसाथ से कहते हैं कि तुम इन वचनों से घर में जाग जाओगे। जहां तुम मूल-मिलावे में मिलकर बैठी हो, वहां तुम अपने आपको और धनी को याद करो।

तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानी सों बिगत।
इत बड़ा चौक जो मध, ताकी अति बड़ी सोभा सनन्ध।। १६४ ।।

नीचे प्रथम भोम की पांचवीं गोल हवेली मूल-मिलावे के थंभों की जुगत (युक्ति) अलग है, जिसका वाणी से वर्णन करना सम्भव नहीं है। इस बड़े चौक के बीच की बहुत बड़ी शोभा है।

आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएं बाएं दोऊ पार।
जोत चारों तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर।। १६५ ।।

दाएं, बाएं, आगे, पीछे, दोनों तरफ दो-दो थंभों की हारें (कतारें) हैं और चारों तरफ जवेर झलकते हैं।

Nijanand App

मंदिर दिवालों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार।
जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे।। १६६ ।।

मन्दिरों की दीवारों की, थंभों की शोभा झलकती है। ऊपर चंद्रवा (चंदोवा) नीचे गलीचे की ज्योति आपस में टकराती हुई शोभा देती हैं।

इत अनेक विधों के जो नंग, ताकी किरना देखावें कई रंग।
आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग।। १६७।।

यहां अनेक तरह के नग (नगीने) हैं जिनकी किरणें कई रंग की दिखाई देती हैं। यह किरणें आमने-सामने से बराबर आती हैं। इन तरंगों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच।
दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम।। १६८ ।।

इस चौक के बीच सुन्दर गलीचा भी उसी नूर का बिछा है और दुलीचा भी सुन्दर नरम पश्म का है।

याकी हंसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सो जंग।
किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग।। १६९ ।।

इस दुलीचे की बेलें और फूल तथा रंग हंसते दिखाई देते हैं और जवेर (हीरा-मोती) चमकते हैं। जवेरों के साथ इसकी भी किरणें निरन्तर चलती रहती हैं।

इत धरया जो सिंघासन, राज स्यामा जी के दोऊ आसन।
ताको रंग सोभित कंचन, जड़े मानिक मोती रतन।। १७० ।।

मध्य में जो सिंहासन रखा है वह श्री राजश्यामाजी के बैठने का है। इस सिंहासन का रंग सोने जैसा है जिसमें माणिक, मोती और रत्न जड़े हैं।

पीछले तीन थंभ जो खड़े, ता बीच कई नकसों नंग जड़े।
तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे।। १७१ ।।

सिंहासन के पिछले जो तीन थंभे हैं उनके बीच कई तरह के नग जड़े हैं। बीच में जो तकिए रखे हैं उनके सिरों के ऊपर के फूलों में हरे नग जड़े हैं।

उतरती कांगरी जो हार, बने आसमानी नंग तरफ चार।
कई बेल फूल जड़े माहीं, ताकी उठत अनेक रंग झांई।। १७२ ।।

आसमानी रंग की चारों तरफ उतरती सिंहासन में कांगरी बनी है जिसमें बेल बनी है, फूल जड़े हैं और अनेक रंगों की झांई (परछाईं) उठती है।

कई रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कई देते।
बांई बगलों तकिए दोए, बेलां बारीक बरनन कैसे होए।। १७३ ।।

यहां पर कई रंगों के नग (नगीने) हैं। कहां तक कहूं? हर एक नग से कई तरंगें निकलती हैं। बाईं बगल में दो तकिए रखे हैं जिन पर बारीक बेलें बनी हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

जो जनम सारे लो कहिए, तो एक नकस को पार न पैए।
पचरंगी पाटी मिहीं भरी, कई विध खाजली माहें करी।। १७४ ।।

यहां की एक नक्काशी का भी पार नहीं मिलता। सारे जन्म वर्णन करें तो नहीं कह सकते। पांच रंग की निवार है जिसमें सुन्दर भराव है और कई तरह की चित्रकारी की गई है।

कई चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्री जुगल बिहारी।
दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे।। १७५ ।।

श्री राजश्यामाजी जिस चाकले (आसनी) पर विराजमान हैं उसमें भी कई तरह की चित्रकारी है। इन दोनों स्वरूप श्री राजश्यामाजी को चित्त में ग्रहण कर लो और फिर आत्मा में आनन्द प्राप्त करो।

आतमसों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहू न कहीजे।
फेर फेर कीजे दरसन, आतम से न्यारे न कीजे अधखिन।। १७६ ।।

इन स्वरूप को आत्मा से कभी भी न्यारा (अलग) न करें और आत्मा के अतिरिक्त किसी से कहें नहीं। फिर-फिर कर इन स्वरूपों का चितवन आत्मा में करो और आत्मा से आधे क्षण भी न्यारे (अलग) न करो।

पेहेले अंगुरी नख चरन, मस्तक लों कीजे बरनन।
सब अंग वस्तर भूखन, सोभा जाने आतम की लगन।। १७७ ।।

पहले इन दोनों स्वरूपों की चरण की अंगुरी (उंगली) के नख से मस्तक तक वर्णन करती हूं। फिर सब अंगों का, आभूषणों का जैसे आत्मा जानती है, वर्णन करूंगी।

यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार के दीजे।
गलित गात सब भीजे, जीव भान भूंन टूक कीजे।। १७८ ।।

इन दोनों स्वरूपों को चितवन में धारण करो और अंग को कुर्बान करो। इन दो स्वरूपों की सुन्दरता में अपने जीव को मगन कर दो और संसार से हटाकर टुकड़े-टुकड़े कर दो।

रंग करो विनोद हांस, सांचा सुख ल्यो प्रेम विलास।
घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम।। १७९ ।।

तब श्री राजजी से हंसी और विनोद करके सच्चे प्रेम और विलास के सुखों को लो। परमधाम में तो मेरी परआतम श्री राजजी से सदा सुख लेती है।

पर इत सुख पायो जो मेरी आतम, सो तो कबहूं न काहू जनम।
इत बैठे धनी साथ मिल, हांसी करने को देखाया खेल।। १८० ।।

पर मेरी आत्मा को जो सुख यहां मिला वह किसी को किसी भी जन्म में नहीं मिला। यहां धनी और सुन्दरसाथ मिलकर बैठे हैं और हंसी करने के वास्ते खेल दिखा रहे हैं।

आगे बारे सहस्त्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हुआ भिल।
याको क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार।। १८१ ।।

बारह हजार सखियां हिल-मिलकर बैठी हैं जैसे एक अंग हों। इनके स्वरूप और सिनगार का कैसे वर्णन हो? यह देखने वाली आत्मा ही जान सकती है।

Nijanand App

कई कोट कहूं जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार।
जैसे भूखन तैसे वस्तर, तैसी सोभा सरूप सुन्दर।। १८२ ।।

यहां की शोभा की झलकार का वर्णन करोड़ों और बेशुमार जबानों से नहीं होता, क्योंकि जैसा आभूषण वैसा वस्त्र और वैसे ही श्री राजश्यामाजी के सुन्दर स्वरूप हैं।

इत बड़े चौक मिलावे, धनी साथको बैठे खेलावें।
जो खेल मांग्या है सैयन, जो देखाया फिराएके मन।। १८३ ।।

इस मूल-मिलावे के बड़े चौक में श्री राजजी महाराज सुन्दरसाथ को बिठाकर खेल दिखा रहे हैं। ब्रह्मसृष्टियों ने जो खेल मांगा है उसे उनके मन को फिराकर दिखा रहे हैं।

धनी धाम आप बिसर्जन, खेल देखाया जो सुपन।
तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्यों ए ना फिरत।। १८४ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को भेजकर सपने का खेल दिखाया। उसमें ऐसी सुरता लग गई कि अब पीछे लौटने को चित्त नहीं करता।

धनी दिए दरसन ता कारन, करने को सैयां चेतन।
धनी आप सैयों को दई सुध, सो हम गावत अनेक विध।। १८५ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने आकर दर्शन दिया कि सखियां सावचेत (सावधान) हो जाएं। श्री राजजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को खबर दी। उसे ही मैं अनेक तरह से गा-गाकर बताती हूं।

जागियां तो भी खेल न छोड़ें, फेर फेर दुखको दौड़ें।
धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख।। १८६ ।।

जागने पर भी खेल नहीं छोड़ते। बार-बार दुःख के लिए भागते हैं। श्री राजजी महाराज घर के सुखों की याद दिलाते हैं, फिर भी यह झूठा संसार जो लग गया है नहीं छूटता।

अब आप जगाए के धनी, हांसी करसी मिनों मिने घनी।
अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन।। १८७ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं आकर जगाया और अब आपस में बहुत बड़ी हंसी करेंगे। मैं सब सुन्दरसाथ से कहती हूं कि इन वचनों से परमधाम में जाग जाओगे।

ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां बरनन।
जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम।। १८८ ।।

यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है, इसलिए श्री राजजी का, परमधाम का, ब्रह्मसृष्टियों का वर्णन सुनाया है। जहां मूल-मिलावा में तुम सब मिलकर बैठी हो, वहां अपने आपको तथा श्री राजजी महाराज को याद करो।

करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम।
याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई।। १८९ ।।

यह जो मैंने तुमको जाहिरी में दिखाया है, उसकी तो अन्तरात्मा में पहचान करो और अपने अर्श घर की याद करो जिसे तुम्हारे बिना और कोई नहीं जानता।

Nijanand App

तुम मांगी धनीपे करके खांत, ए जो धनिएं करी इनायत।
याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या तित।। १९० ।।

तुमने खेल को धनी से चाहना करके मांगा और धनी ने भी तुम्हारे ऊपर कृपा करके दिखाया है। जहां मूल-मिलावा में बैठकर खेल को मांगा था, उस पल को याद करो।

स्याम स्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत।
पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब।। १९१ ।।

अपने अन्दर की नजर से श्री राजजी, श्यामाजी की शोभा को क्यों नहीं देखते? पीछला चार घड़ी दिन बाकी था। अभी भी वही समय है।

याद करो जो कह्या मैं सब, नींद छोड़ो जो मांगी है तब।
याद करो धनीको सरूप, श्री स्यामाजी रूप अनूप।। १९२ ।।

मैंने जो तुमसे कहा है उसे याद करो। वह फरामोशी छोड़ दो जो मांगी थी। अब श्री राजजी और श्यामा महारानी के सुन्दर स्वरूपों को याद करो।

याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनों मिने जेह।
सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जे उपजत।। १९३ ।।

उस स्नेह को भी याद करो जो हम सुन्दरसाथ मिलकर करते थे और मिलकर उस सुख का आतम में आनन्द लेते थे।

रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती।। १९४ ।।

यह प्रेम के स्वरूप बड़े रसिया हैं। इनको चित्त में धारण करो। यहां हम सब कई तरह के आनन्द के खेल खेलते थे। मैं जागृत बुद्धि लेकर तुम्हें जगाती हूं और मूल परमधाम के सुख दिखाती हूं।

प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती।
पियाजी कहें इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती।। १९५ ।।

प्रेम के पूर (प्रवाह) सागर की लहरों के समान चलाती हूं और सब सुन्दरसाथ को भी आनन्द देती हूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि धनी श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान तारतम वाणी से कराती हूं।

तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जानें धाम में पैठियां, ए तो घरही में जाग बैठियां।। १९६ ।।

इसलिए श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को प्रेम से तौल रही हैं। प्रेम की परीक्षा लेती हैं और धाम के दरवाजे को खोलती हैं। जिससे सुन्दरसाथ अनुभव करें कि हम परमधाम में ही बैठे हैं। फिर तो यह धाम में जाग ही जाएंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८२ ॥

Nijanand App